Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वैदिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में समन्वय : वर्तमान की आवश्यकता

नीलेश सिंह* डॉ. मुक्ता मिश्रा**

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, खुरई (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक विभागाध्यक्ष (इतिहास) महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय चारों ओर चुनौतियां प्रस्तुत कर रहा है। मनुष्य ने अपनी प्रारंभिक अवस्था से चलकर संस्कृति का निर्माण करते हुए एक सुविकसित सभ्यता को प्राप्त किया है। आज वर्तमान युग में मानव ने जिस सभ्यता को विकसित किया है उसका मूल उद्देश्य भौतिक उपकरणों का विकास कर जीवन को सरल बनाना और अधिकाधिक शारीरिक सुखों की पूर्ति करना है। सभ्यता के इस विकास का मुख्य आधार आधुनिक शिक्षा को माना जाता है। यदि यह कहा जाये कि आधुनिक शिक्षा ही वर्तमान सभ्यता की वाहक है तो अतिश्योक्ति ना होगी। जिस प्रकार **न्युटन** ने अपने तृतीय नियम **'क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया'** में अपने विचार व्यक्त किये हैं उसी प्रकार वर्तमान आधुनिक शिक्षा आधारित **उपकरण परम्परा** ने मनुष्य के बाहरी सुखों में इस तरह वृद्धि की है कि उसका आंतरिक विकास अवरूद्ध हो गया है। आज विकास के विकार मनुष्य के अंतर मन से बाहर निकलकर भौतिक जीवन को प्रभावित करने लगे हैं। आज आधुनिक शिक्षा आधारित वैज्ञानिक विकास ही वास्तविक विकास की एक पक्षीय अवधारणा के परिणाम फलीभूत होने लगे हैं। वर्तमान में मानव जाति के साथ-साथ संपूर्ण जीव-जगत् के समक्ष अनेक चुनौतियां उपस्थिति हैं। जैसे-युद्ध, पर्यावरण प्रदूषण, स्वास्थ्य समस्याएं, जलवायु परिवर्तन, मानसिक तनाव, सांस्कृतिक क्षरण, नैतिक पतन, प्रजातीय विलुप्तीकरण आदि।

'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है' वाक्य के भाव को चरितार्थ कर आज मनुष्य के बाह्य और आंतरिक पक्ष को संन्तुलित करना आवश्यक है अर्थात भौतिक और नैतिक जीवन के मध्य समंजस्य ही सतत् विकास की कुंजी है। इस हेतु हमें **स्वामी दयानंद सरस्वती** के कथन **'वेदों की ओर लौटो'** के महत्व को समझकर हमारी प्राचीन वैदिक शिक्षा में उपरोक्त समस्या का हल तलाशना होगा। जहाँ वैदिक शिक्षा आधुनिक शिक्षा का मूल आधार है, वहीं इसका मुख्य विषय इंद्रिय नियंत्रण, आत्म अनुशासन, परोपकार, दया जैसे नैतिकता से परिपूर्ण हैं जो भारतीयों की **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** एवं **'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय'** की भावना को अनुप्रमाणित करते हैं। वैदिक शिक्षा मनुष्य के आंतरिक पक्ष को सबल बनाकर नैतिक मूल्यों को विकसित करने में सहायक है। इस प्रकार 21वी सदी में **पश्चिम का विज्ञान (आधुनिक शिक्षा)** और **पूर्व का आध्यात्म (वैदिक शिक्षा)** समन्वित होकर संतुलित व समयानुकूलित जीवन का विकल्प प्रस्तुत कर सकेंगे।

शब्द कुंजी–वैदिक शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, भौतिक पक्ष, आध्यात्मिक, नैतिक मूल्य, समन्वय, संस्कार, गुरु-शिष्य, संतुलन, शिक्षा प्रणाली।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है। विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं, पुस्तकों, जिला गजेटियर, समाचार पत्रों, समकालीन साहित्य, विभिन्न इतिहासकारों के वक्तव्य, पुस्तकालयों, अभिलेखागारों आदि से प्राप्त द्वितीयक तथ्यों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करके निष्कर्ष प्राप्त किए गए है।

प्रस्तावना – प्रत्येक शिक्षा पद्धति में कुछ गुण और कुछ दोष अवष्य होते हैं जो समयांतर पर अपने सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। प्रत्येक परिवार, समाज और राष्ट्र की अपनी मौलिक संस्कृति, विचारधारा और मूल्य होते हैं। ये मौलिक तत्व ही उस देश की पहचान होते हैं जो अन्तराष्ट्रीय स्तर पर उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। जहां आधुनिक शिक्षा वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता है, वहीं इसके गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी हमारे सामने दृष्टिगोचर होने लगे हैं। आधुनिक शिक्षा के माध्यम से नवीन आविष्कार हुए हैं जिसने मानव जीवन को सरल और सुलभ बनाया है। किंतु इससे मनुष्य के जीवन के केवल बाह्य पक्ष का ही विकास हुआ है। आज मनुष्य का इतना विकास हो चुका है कि वह अपने नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। आधुनिक शिक्षा आधारित विकास ने मनुष्य को एकाकी, चिडचिडा तथा तनाव ग्रस्त कर दिया है। इस प्रकार हमें आधुनिक शिक्षा की विशेषताओं को अपनाते हुए इसके माध्यम से उत्पन्न विकारों को नियंत्रण करना होगा।

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर आज तक मानव को जैसा वातावरण और शिक्षा प्राप्त हुई है वैसा ही उसका आचरण रहा है। 21वीं सदी में आधुनिक शिक्षा के परिणामस्वरुप अनेक आविष्कारों के माध्यम से मनुष्य ने बहुत सी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की है। हम इसके लाभों को एका-एक नकार नहीं सकते। इसी प्रकार प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा का भी अपना कम महत्व नहीं है। यदि आधुनिक शिक्षा के माध्यम से मनुष्य का भौतिक विकास हुआ है तो वैदिक शिक्षा ने आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। आधुनिक शिक्षा ने सभ्यता के विकास में सहायता प्रदान की है तो वैदिक शिक्षा ने संस्कृति को सबल किया है। यदि आधुनिक शिक्षा के माध्यम से मनुष्य का लौकिक जीवन सरल हुआ है तो वैदिक शिक्षा ने पारलौकिक जीवन को सुधारा है। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षा प्रणाली के अपने गुण होते हैं

जो कालांतर में दोषों में परिवर्तित हो जाते है और लोग एक नयी शिक्षा प्रणाली को अपनाने लगते है। जब लोग इस संक्रमणशील दौर से गुजर रहे होते हैं तो उन्हें शिक्षा पद्धतियों के अच्छे-बुरे लक्षण नजर आने लगते हैं। इस परिस्थिति में एक भ्रामक स्थिति निर्मित होती है कि कौन सी शिक्षा पद्धति को अपनाया जाये और किसको छोड़ा जाये। इस बात का निर्णय शिक्षा जगत के बुद्धिजीवी अपने विवेक,अनुभव और शोध के माध्यम से करते हैं। हमने पश्चात्य शिक्षा जिसे आधुनिक शिक्षा की संज्ञा दी जाती है, के माध्यम से अनेक भौतिक वस्तुओं का आविष्कार किया है। इनके माध्यम से मनुष्य ने अपने जीवन को सुखमय और मनोरंजन से परिपूर्ण किया है,किंतु सभ्यता के इस विकास क्रम में शनै:-शनै वह आधुनिक शिक्षा के आविष्कारों या साधनों का दास होता चला गया। आज स्थिति इतनी विकराल हो गई है कि मनुष्य के आंतरिक पक्ष के नैतिक मूल्य,संस्कार और आध्यात्मिक तत्व मृतप्राय हो गए हैं। इससे परिवार,समाज और राष्ट्र में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अत: इन मृतप्राय नैतिक मूल्यों और संस्कारों को वैदिक शिक्षा रूपी जल से सिंचित करने की आवश्यकता है। वैदिक शिक्षा का संबंध हमारे आंतरिक पक्ष को मजबूत करने वाले और व्यक्तित्व को विकसित करने वाले तत्वों से है। इसी शिक्षा प्रणाली के दम पर भारत एक समय **विश्व गुरू** के पद पर प्रतिष्ठित हो चुका है।

चर्चा के बिंदु - प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा और आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा, दोनों के समयानुसार अप्रसांगिक तत्वों को अस्वीकार्य कर लाभकारी तत्वों का समन्वय करके वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक नवीन विकल्प प्रस्तुत करना है। अत: इस हेतु प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा और आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा के गुण-दोषों का पता लगाना आवश्यक है।

आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा

गुण:

- **आधुनिक शिक्षा तर्क** आधारित है। इसने दकियानूसी प्रथाओं के स्थान पर वैज्ञानिक चेतना को बढ़ावा दिया है। इस शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान के आलोक में भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास को कम करने में सहायता मिली है।
- आधुनिक शिक्षा के द्वारा ही विभिन्न कानूनों के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त अनेक **शोषणकारी प्रथाओं को दूर** किया जा सका है। जैसे सती प्रथा निरोध कानून 1829, दहेज प्रथा निवारण अधिनियम 1961, नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955 आदि।
- आधुनिक शिक्षा आधारित स्वास्थ्य व्यवस्था ने अनेक **गंभीर बीमारियों से निजात** दिलाने में सहायता प्रदान की है। पहले प्लेग, हैजा जैसी महामारियों ने लाखों लोगों को काल के गाल में समाहित किया है, किंतु आज इन बीमारियों के साथ-साथ कोरोना जैसी नवीन महामारियों को नियंत्रित करने में सहायता मिली है।
- आधुनिक शिक्षा रटने के स्थान पर **सीखने को बढ़ावा** देती है। यह समय के साथ तालमेल बैठाकर रचनात्मकता और गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है। आधुनिक शिक्षा ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देकर मानव जीवने में मनोरंजन के विकल्प उपलब्ध कराकर भौतिक सुविधाओं में उत्तरोतर वृद्धि की है।

दोष:

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का **प्रकृति से जुड़ाव न्यूनतम** रहा है। आज शहर के दूषित वातावरण और कोलाहलपूर्ण माहौल में,पत्थरनुमा कांक्रीट के भवनों में शिक्षा प्रदान की जा रही है, इससे विद्यार्थी प्रकृति के महत्व को भूलकर उसके प्रति संवेदनहीन होते जा रहे हैं। उदाहरण के रूप में आधुनिक शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार समझ सकते हैं कि,पहले शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, छात्रावास और अन्य भवनों का निर्माण करो और निर्माण हेतु पेड़ों को काटकर पर्यावरण संरक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल करो। यह पर्यावरण के प्रति मजाक नहीं तो और क्या है ?
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली मानसिक तनावग्रस्त करने वाली **प्रतियोगिता पर आधारित** है। इसका उदाहरण हम वर्तमान में राजस्थान के कोटा में बच्चों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के रूप में देख सकते हैं। आधुनिक शिक्षा में संस्कारों को कम महत्व और रोजगार तथा आर्थिक समृद्धि को अधिक महत्व दिया जा रहा है। आज भारत में सिविल सेवकों के लिए सिविल आचरण संहिता और पाठ्यक्रम में नीति शास्त्र का समावेश इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि आधुनिक शिक्षा में प्रतियोगिता के माध्यम से आये लोकसेवकों/अधिकारियों का चरित्र नैतिक मूल्यों और संस्कारों से विचलित है।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में **गुरु-शिष्य का मधुर संबंध खंडित** हो गया है। आज गुरु-शिष्य परंपरा औपचारिक संबंधों तक सीमित होकर रह गई है। यह प्राय: व्यवसायिक उद्देश्यों को पूर्ण करती है। वर्तमान में **नोट्स कल्चर और वर्चुअल क्लासरूम** ने गुरु की भौतिक अनुपस्थिति का समर्थन करते हुए एक प्रकार से गुरु के महत्व को ही नकार दिया है।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने मानव जीवन को भौतिक सुख प्रदान करने के फेर में **प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल** के ***'मांग के सिद्धांत'*** का समर्थन करते हुए औद्योगीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया है। परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, तनावग्रस्त जीवन, बाल मजदूरी, गंदी बस्तियां, शहरीकरण, एकल परिवार आदि समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। आधुनिक शिक्षा ने लोभ को बढ़ावा दिया है। यहाँ **महात्मा गांधी** की एक बात प्रासांगिक है- ***'यह पृथ्वी सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए तो पर्याप्त है किंतु किसी एक के लोभ को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।'***
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में **'अनुभव सबसे बड़ा गुरू है'** की अवधारणा को नकारा गया है। इसका प्रमाण इसका सूचना आधारित होना है। इसमें सफलता को ही अधिक महत्व दिया रहा है। इसीलिए इसका उद्देश्य वर्तमान में **'विद्या ददाति विनयं'** से **'विद्या ददाति पदम्'** में परिवर्तित हो गया है।

प्राचीन वैदिक शिक्षा

गुण:

- वैदिक शिक्षा पद्धति में मनुष्य के संपूर्ण विकास को स्वीकारा गया है। इसमें व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य दोनों पक्षों के संतुलन पर जोर दिया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य **'सा विद्या या विमुक्ते'** हैं, जिसमें व्यक्ति के आत्मीय तत्वों के विकास पर जोर दिया गया है। वैदिक शिक्षा बालक के मन, बुद्धि, आत्मा और शरीर सभी को परिष्कृत करती है।
- वैदिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी के आध्यात्मिक विकास को अधिक महत्व दिया जाता था। वास्तविक जीवन में हम क्रोध, लोभ, अहंकार द्वेष जैसी कुप्रवृत्तियों में ही उलझे रहते हैं,जिसकी परिणीति नैतिक पतन के रूप में हमारे सामने फलीभूत होती है। इसीलिए इन प्रवृत्तियों के त्यागने के लिए प्रार्थना की गई है-

असतो मां सद्गमय।
तमसो मां ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

- वैदिक शिक्षा में स्वास्थ्य शिक्षा पर भी जोर दिया गया है। इसलिए कहा गया है **'सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया:'**। इस वाक्य के माध्यम से निरोगी काया, सभी प्राणियों और सभी के कल्याण की बात की गई है। एक प्रकार से वैदिक शिक्षा में **'स्व'** और **'पर'** का भेद सूक्ष्म रह जाता है। इसमें स्वयं के उत्थान के साथ-साथ सभी के उत्थान को भी समाहित किया है **'स्वस्थ मस्तिष्क का अधिष्ठान स्वस्थ शरीर होता है'**। यही हमारे प्राचीन मनीषियों की अवधारणा रही है। वैदिक शिक्षा में व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को आश्रम व्यवस्था के आधार पर सुनियोजित किया गया था, जिसमें प्रथम आश्रम में विद्यार्थी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर, वीर्य संरक्षण, इंद्रिय नियंत्रण और शारीरिक पुष्टता का विकास करता था। जो यह दर्शाता है कि हमारे प्राचीन ऋषियों ने शरीर को हष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनाने हेतु षारीरिक शिक्षा को बहूत महत्व दिया था। **महाकवि कालिदास** ने अपने महाकाव्य-**'कुमारसम्भव'** में एक अनुपम बात लिखी- **'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'**। इस प्रकार हमारे सांस्कृतिक विकास में एक स्वस्थ शरीर का बहुत महत्व है।
- भारतीय शास्त्रों में **अच्छे चरित्र** को ही व्यक्ति का प्रमुख आभूषण माना गया है। चरित्र से हीन व्यक्ति हमेशा निंदनीय होता है। इसलिए कहा गया है कि-

सावित्रीमात्र सारोपी वर विप्र: सुनियंत्रित।
नायंत्रितस्त्रिवेदोपि सर्वाशी सर्वविक्रमी।।

अर्थात 'सभी वेदों का ज्ञाता विद्वान भी सच्चरिता के अभाव में श्रेष्ठ नहीं है, किंतु केवल गायत्री मंत्र का ज्ञाता पंडित भी यदि वह चरित्रवान है तो श्रेष्ठ कहलाने योग्य है'। चरित्र निर्माण के द्वारा ही समाज में अनुशासनात्मक जीवन स्थापित होता है। कहा भी गया है कि- **'सत्यम वद। धर्मचर। स्वाध्यानमा प्रदमद:।'** सत्कर्मों से ही चरित्र निर्माण होता है। इसलिए संपूर्ण वैदिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के आधार पर शिक्षा प्रदान की जाती थी। विद्यार्थियों से सत्कर्मों के अनुसार आचरण की अपेक्षा की जाती थी।
- वैदिक शिक्षा पद्धति में शिक्षण स्थान गुरु का घर होता था जो बस्तियों से दूर, सामान्यत: एकांत में होता था। विद्यार्थी प्रकृति की गोद में स्वच्छंद वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर प्राकृतिक तत्वों और जीव-जंतुओं से घिरे रहते थे। प्रकृति के प्रति इतना लगाव होता था कि, इसके संरक्षण हेतु अति संवेदनशीलता होती थी, क्योंकि विद्यार्थी को प्रारंभिक जीवन से ही प्रकृति के दैवीयकरण की शिक्षा दी जाती थी। इस कारण विद्यार्थी अपने जीवन में प्रकृति संरक्षण को हमेशा वरीयता देता था। वैदिक ग्रन्थों में **मानव और प्रकृति** के मध्य मधुर संबंधों की बात कही गई है- **माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:। पर्जन्य: पिता स उ न पिपतु।।** यह मंत्र प्राचीन ऋषियों का प्रकृति से जुड़ाव को प्रदर्शित करता है। वैदिक काल के देवता भी प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक समझे जाते थे। सूर्य, अग्नि, द्यौस, मरूत, वायु, इन्द्र, वरूण, मित्र आदि प्रमुख प्राकृतिक देवता थे। ऋग्वेद में **ऋत की अवधारणा** भी तत्कालिक मान्यताओं की और संकेत करती है। प्रारंभ में **विन्टरनिट्ज, मैकडॉनल, कीथ** आदि सभी विद्वानों नें 'ऋत' की व्याख्या की है।
- प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा में **गुरु-शिष्य संबंध** पिता-पुत्र के समान थे। शिष्य, गुरु के घर पर शिक्षा प्राप्त करता था। गुरू की सेवा करता हुआ शिष्य परिवार के सदस्य की भांति निवास करता था। इस संबंध में **मनुस्मृति** में कहा गया है कि उपनयन संस्कार के पश्चात शिष्य का दूसरा जन्म होता है। गायत्री माता और आचार्य उसका पिता होता था। (**तत्र यद बहा जन्मास्य मीजीबन्धनचिहितम्। तत्रास्य माता सावित्री पितात्वाचार्य उच्यते।।**) शिष्य का सामान्यत: एक ही आचार्य होता था। जो शिष्य एक आचार्य को छोडकर दूसरे आचार्य के पास जाते थे ऐसे शिष्यों को **पतंजलि** ने **'तीर्थकाक'** बताया है। **जातक ग्रथों** में ऐसी जानकारी मिलती है कि गुरू कभी-कभी अपने योग्य शिष्य का विवाह अपनी कन्या से कर देते थे। समावर्नतन संस्कार के बाद शिष्य, गुरू को दक्षिणा देकर वापस अपने मूल गृह को चला जाता था। किन्तु शिष्य हमेशा अपने गुरू के संपर्क में रहता था। इस प्रकार वैदिक शिक्षा में गुरू-शिष्य संबंध परस्पर स्नेह और सोहार्द पर निर्भर थे और नैतिकता से परिपूर्ण थे।

दोष:

- प्राचीन वैदिक शिक्षा में प्रमुख दोष **धार्मिक जटिलता** और उसका व्यापक प्रभाव था, क्योंकि वैदिक शिक्षा का मूल आधार धर्म है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार नियोजित किया गया कि वह हर समय धार्मिक क्रियाकलापों में ही व्यस्त रहता था। धीरे-धीरे इसमें आडंबर का भी समावेश होता गया। उदाहरण के लिए वैदिक समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने संपूर्ण जीवन काल में 16 संस्कारों को करना, चार आश्रमों में अपना जीवन विभाजित कर जीना, अनेक यज्ञ अनुष्ठान करना, पितृ ऋण चुकाना, दान-पुण्य करना आदि। वैदिक शिक्षा व्यवहारिकता की अपेक्षा आदर्शवादी अधिक थी। इसमें व्यक्ति के भौतिक विकास की अपेक्षा आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया गया। विद्यार्थी से अत्यधिक तप और त्याग की अपेक्षा की जाती थी। विद्यार्थी की अधिकांश ऊर्जा इंद्रिय नियंत्रण में ही लगा दी जाती थी। इस प्रकार वैदिक शिक्षा में विद्यार्थी अपनी मौलिक रचनात्मक प्रतिभा को प्रखर नही कर पाता था।
- प्राचीन सांस्कृतिक सुरक्षा पर विशेष बल देने के कारण नवीन रचनात्मक ज्ञान आधारित विद्वानों की पीढ़ी का अभाव रहा। सामान्यत: पांचवी शताब्दी तक इतिहास, दर्शन, खगोल, गणित आदि क्षेत्रों में प्रगति तो देखने को मिलती है, किंतु कालांतर में हमारे प्राचीन बौद्धिक जगत के विद्वानों ने नवीन ज्ञान की अपेक्षा प्राचीन सांस्कृतिक ज्ञान की विरासत को धरोहर मानकर अपना पूरा ध्यान उसके संरक्षण पर केंद्रित कर लिया।
- वैदिक शिक्षा में वेद और उनसे संबंधित ग्रंथों का इतना व्यापक महत्व हो गया कि यदि कोई तर्कशक्ति पर स्वीकार्य तथ्य प्रकाश में आता है तो उसको स्वीकृति तभी मिलेगी जब वह वेदों और उनसे संबंधित शिक्षा का अनुसमर्थन करे अन्यथा उसको अस्वीकृत कर दिया जाता था। इसका तात्पर्य है कि वैदिक शिक्षा में **शोध को निम्न महत्व** दिया गया। इस प्रकार के वातावरण में व्यक्ति के मौलिक चिंतन और गवेशणाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ा।
- वैदिक शिक्षा का आरंभिक दृष्टिकोण व्यापक और उदार था, किन्तु कालान्तर में इसका **स्तरीकरण** हो गया। अब शिक्षा प्रदान करने में भेद-भाव होने लगा। उपनयन संस्कार में विभिन्न वर्णो के अनुसार यज्ञोपवीत इस बात को प्रमाणित करता है कि वैदिक शिक्षा कालान्तर में उच्चकुल तक सीमित हो गई। इसके साथ-साथ लिंगभेद भी देखने को मिलने लगा। सामान्यत: सह शिक्षा का प्रचलन नहीं था। केवल बालक ही गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करते थे। बालिकाओं के उदाहरण कम ही मिलते हैं।

• **भारतीय विद्वानों की हट धर्मिता** के कारण भी वैदिक शिक्षा में बाह्य ज्ञान का समावेश नहीं हो पाया। भारतीय विद्वान अपने ज्ञान-विज्ञान पर इतने दंभी और हटी हो गए कि उनमें बाह्य ज्ञान के प्रति अकर्मण्यता आ गई। यदि प्रारंभ के कुछ प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों जैसे **वराहमिहिर, आर्यभट्ट** आदि को छोड़ दें तो सभी प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक बाह्य जगत की वैज्ञानिक प्रगति से अपरिचित रहे। भारतीय विद्वानों की इस संकीर्ण सोच का उल्लेख मध्यकालीन अरबी इतिहासकार अलबरूनी ने अपनी रचना **'किताबुल हिन्द'** में भी किया है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध अध्ययन में हमने वैदिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा दोनों के गुण और दोषों का विश्लेषण किया। यदि हम वैदिक और आधुनिक शिक्षा के दोषों को दूर करके केवल इसकी विशिष्टतायों के आधार पर इनका समन्वय करें तो नि:संदेह हम भारतीय जीवन प्रणाली को समयानुकूलित कर इसकी गौरवमय संस्कृत का भी संरक्षण कर सकते हैं। संबंधित अध्ययन सामग्री की छानबीन के उपरांत हम निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं-

यदि प्राचीन भारत में हमारे ऋषियों, मनीषियों और विद्वानों ने वैज्ञानिक चेतना और स्वतंत्र तर्कशील विचारों का समर्थन किया होता तो आज भारतीय इतिहास की तकदीर और तस्वीर भिन्न होती। उदाहरण के लिए धर्म आधारित शिक्षा के समान तर्क आधारित शिक्षा (गणित, खगोल, रसायन, मौसम विज्ञान, धातु विज्ञान, युद्ध कला आदि) को महत्व दिया होता तो भारतीय राजाओं, नरेशों आदि की युद्ध प्रणाली अस्त्र-सस्त्र विद्या तकनीक आधारित होती, जिससे बाहरी आक्रमणकारी भारत पर आक्रमण करने की सोचते भी नहीं ओर आक्रमण करते भी तो पराजित होने की संभावना अधिक होती। इसके कुछ प्रमाण दिये जा सकते हैं-

सिकन्दर और पोरस के मध्य जब युद्ध हुआ तो पोरस की सेना पर्याप्त थी। **एरियन के अनुसार** पोरस की सेना में 400 अश्वारोही, 300 रथ, 200 हाथी और 30000 पैदल सैनिक थे। किन्तु वर्षा के कारण पोरस अपने युद्ध संसाधनों का समुचित प्रयोग नहीं कर सका जिससे उसकी पराजय हुई। इसका तात्पर्य यह हुआ कि भारतीय नरेश मौसम विज्ञान और युद्ध-कला के ज्ञान से पूर्णत: परिचित नहीं थे।

बाबर अपने तोपखाना, तोपों को सजाने की उस्मानी विधि, तुलुगमा युद्ध नीति आदि के कारण भारत में विजय हुआ। नि:संदेह इसमें रसायन विज्ञान (गोला बारूद), गणित (ज्यामिति) आदि का ज्ञान आवश्यक है, जिससे भारतीय नरेश अनभिज्ञ थे।

आधुनिक भारत में युरोपियों का प्रवेश और विशेष तौर पर अंग्रेजों का भारत में विजित होना तर्क और विज्ञान आधारित संसाधनों से संभव हो सका। जैसे-नाविक संचालन हेतु भूगोल, मौसम विज्ञान तथा दिशा का ज्ञान होना। प्लासी एवं बक्सर जैसे निर्णायक युद्धों में आधुनिक हथियारों का प्रयोग होना इस बात के प्रमाण है कि अंग्रेज भारतीय नबावों और नरेशों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी संपन्न साधनों से परिचित थे।

यदि प्राचीन भारतीय विद्वान तर्क और विज्ञान आधारित शिक्षा के प्रति जागरूक होते तो यूरोप की अपेक्षा पुनर्जागरण भारत में पहले प्रारंभ होता। जिस प्रकार यूरोप में प्राचीन चर्च की आडंबरपूर्ण धार्मिक नीतियों को त्याग कर तर्क आधारित नवीन ज्ञान के आलोक में आविष्कारों और खोजों ने दुनिया को बदला उसका श्रेय यूरोप की अपेक्षा भारत को दिया जाता।

भारतीय विद्वान नि:संदेह अपने प्राचीन ज्ञान और संस्कारों के संरक्षण के प्रति जागरूक थे, किंतु शनै:-शनै: वे अपने सांस्कृतिक गौरव पर अधिक दंभ करने वाले संकीर्ण विचारों से प्रभावित हो गए। कुछ प्राचीन विद्वानों को छोड़ दिया जाए तो भारतीय विद्वान बाह्य ज्ञान-विज्ञान से वंचित रहे। इसके विपरीत भारत के ज्ञान भंडार का दूसरे देशों ने लाभ उठाया। कालांतर में इस ज्ञान के उपयोग से उन देशों ने उन्नति की। **भारतीय गणित, विज्ञान, खगोल, दर्शन आदि का ज्ञान पहले अरब और फिर अरबों के माध्यम से युरोप पहुंचा।** यदि भारत ने इस ज्ञान का समुचित लाभ लिया होता तो नि:संदेह पुनर्जागरण और वैज्ञानिक क्रांति का आरंभ युरोप की अपेक्षा भारत से हुआ होता।

आज वैदिक शिक्षा जो धर्म आधारित है और आधुनिक शिक्षा जो विज्ञान आधारित है इसका सुन्दर समन्यवय हम **इज़राइल की सस्कृति** में देख सकते हैं। जहां एक ओर इज़राइल का फिलीस्तीन सहित अन्य अरब मुल्कों से धार्मिक स्थल येरूसलम को लेकर विवाद है वहीं अपने सैन्य बल (जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित है) के दम पर सभी को पराजित कर अजेय शक्ति बना हुआ है।

21वी सदी में हमने विकास तो बहुत किया है किन्तु यह विकास एक पक्षीय, असन्तुलित और भेदभावकारी है। आज विज्ञान आधारित विकास ने मनुष्य सहित समस्त जीव-जगत् और विष्व के सामने अनेक चुनौतियां प्रस्तुत की हैं। जैसे-पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य समस्याएं, परिवार क्षरण, अन्तराष्ट्रीय द्वंद्व आदि समस्याएं हमारे समक्ष हैं। इसके निराकरण हेतु राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न नियमों, कानूनों, तथा सम्मेलनों के माध्यम से प्रयास किये जा रहे हैं। वास्तव में ये सारी समस्याएं नैतिकता और आत्मबोध से संबंधित हैं। प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा का उद्देश्य ही चरित्र निर्माण कर नैतिक मार्ग का अनुसरण करना है। अत: 21वी सदी की इन सभी समस्याओं का हल हमारी वैदिक शिक्षा व्यवस्था में उपस्थिति है।

उपरोक्त शोध अध्ययन में हम विषय संबंधी अनेक स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर ऐसे बिंदुओं को प्रकाश में लाए हैं जो भारतीय वैदिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के सुंदर समन्वय का समर्थन करते हैं। इसमें विभिन्न उदाहरणों और प्रमाणों के माध्यम से यह भी बताने का प्रयत्न किया गया है कि यदि प्राचीन वैदिक शिक्षा के दोषों को दूर कर आधुनिक चिंतन और तर्कशील, स्वतंत्र विचारों को समाहित किया जाता तो आज भारतीय इतिहास में भिन्नता होती। एक कहावत भी प्रचलित है कि **'सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते'** कहने का अर्थ है कि आज हम उस दोराहे पर आकर पुन: खड़े हो गए हैं जहां 3500 साल पहले थे। आज की वर्तमान समस्याओं का निराकरण हमारी वैदिक शिक्षा में उपलब्ध है। अत: आज यदि संतुलित जीवन स्थापित करना है तो हमें आधुनिक शिक्षा आधारित भौतिक सुखों का लाभ उठाते हुए उसमें वैदिक शिक्षा के नैतिक तत्वों का समन्वय करके उज्जवल भविष्य की आधारशिला रखनी होगी। इस प्रकार हम अपने लौकिक जीवन के साथ-साथ पारलौकिक जीवन को भी उन्नत बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. गुप्ता, एस.के., आधुनिक भारत, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2013
2. ग्रोवर,बी.एल.एवं मेहता अलका,आधुनिक भारत का इतिहास,नई दिल्ली, एस चंद , 2018, पृष्ठ 48, 53

3. जैन, डॉ. हुकुम चंद और माथुर, डॉ. कृष्ण चंद्र, विश्व इतिहास: एक सर्वेक्षण (1500 से1956), जयपुर, जैन प्रकाशन मंदिर,2008
4. झा, द्विजेंद्र नारायण एवं श्रीमाली, कृष्ण मोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय ,2007
5. दहीभाते, ए.सी., इतिहास, भोपाल, रामप्रसाद और संस, 2020-21
6. पटेल,साधना किशोर और खान,रोशनी युसूफ खान,नीतिशास्त्र,इंदौर, महावीर प्रकाशन 2022
7. मार्शल, अल्फ्रेड, 'मांग का सिद्धांत', विकिपीडिया
8. श्रीवास्तव, के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, इलाहाबाद, यूनाइटेड बुकडिपो,2015-16
9. शर्मा, एल.पी.,मध्यकालीन भारत, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2015-16, पृष्ठ 9
10. श्रीवास्तव, के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, इलाहाबाद, यूनाइटेड बुकडिपो,2015-16 पृष्ठ 765

****